Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

संवेदना से नैतिक चेतना तकः डॉ. पद्मजा शर्मा स्त्री-दृष्टि का आलोचनात्मक अध्ययन

ललिता डाबी
शोधार्थी, जयनारायण व्यास विश्व विद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *ललिता डाबी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21904446

सारांश

समकालीन हिन्दी साहित्य में गद्य-विधाओं का विस्तार मात्र शिल्पगत प्रयोग नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, नैतिक विवेक और मानवीय संवेदना के सघन संवाद का माध्यम है। इस संदर्भ में डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य-साहित्य एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में उभरता है, जो कविता और कथा की सीमाओं को पार करते हुए निबंध, संस्मरण, समीक्षा, यात्रा वृत्तांत, साक्षात्कार और सामाजिक सांस्कृतिक लेखन के माध्यम से जीवन की बहुस्तरीय वास्तविकताओं को उद्घाटित करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य डॉ.पद्मजा शर्मा के गद्य-लेखन में निहित संवेदना की प्रकृति, उसकी सामाजिक भूमिका तथा स्त्री-दृष्टि के वैचारिक विस्तार का गहन विश्लेषण करना है, विशेषतः उस संवेदना के आलोक में जो भावुकता नहीं, बल्कि नैतिक चेतना का रूप ग्रहण करती है।

अध्ययन का आधार डॉ. पद्मजा शर्मा की रचनाओं के उस वैचारिक ताने-बाने को बनाया गया है, जहाँ गद्य साहित्य केवल सौंदर्य बोध का साधन न होकर सामाजिक यथार्थ, स्त्री अनुभव, सांस्कृतिक स्मृति और मानवीय मूल्यों का सशक्त वाहक बनता है। उनके निबंधों में सामाजिक विषमताएँ, स्त्री-जीवन की जटिलताएँ और शिक्षा संस्कृति से जुड़े प्रश्न विवेकपूर्ण तर्क के साथ उपस्थित होते हैं। संस्मरणात्मक गद्य में आत्मीयता और अनुभवजन्य सत्य का ऐसा संतुलन दिखाई देता है,जो पाठक को व्यक्तिगत अनुभूति से सामाजिक सन्दर्भ तक ले जाता है। इसी प्रकार उनकी समीक्षाएँ और आलोचनात्मक लेखन रचनात्मक निष्पक्षता, संवेदनशील दृष्टि और वैचारिक परिपक्वता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

इस शोध में यह तर्क स्थापित किया गया है कि डॉ. पद्मजा शर्मा की संवेदना करुणा या सहानुभूति तक सीमित न रहकर प्रतिरोध, प्रश्नाकुलता और नैतिक हस्तक्षेप का स्वर धारण करती है। उनका गद्य स्त्री को केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, विवेकशील और आत्मसम्मान से युक्त व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करता है। साथ ही, प्रकृति, लोक संस्कृति और मानवीय संबंधों के प्रति उनकी दृष्टि गय को व्यापक सामाजिक सरोकारों से जोड़ती है।

निष्कर्षतः यह शोध-पत्र यह प्रतिपादित करता है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य-साहित्य हिन्दी गद्य परंपरा में एक महत्वपूर्ण नैतिक और वैचारिक विस्तार है, जो साहित्य को सामाजिक परिवर्तन की चेतना से जोड़ता है और पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। इस दृष्टि से उनका गद्य न केवल साहित्यिक रूप से प्रासंगिक है, बल्कि समकालीन समाज के लिए भी दिशासूचक सिद्ध होता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 01-03-2026
- **Accepted:** 06-06-2026
- **Published:** 17-07-2026
- **MRR:**4(SP1); 2026: 228-233
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डाबी ल, संवेदना से नैतिक चेतना तकः डॉ. पद्मजा शर्मा स्त्री-दृष्टि का आलोचनात्मक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(SP1): 228-233.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मूल शब्द: संवेदना, नैतिक चेतना, गद्य-विधाएँ, स्त्री-दृष्टि, सामाजिक सरोकार

© 2026 ललिता डाबी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में गद्य-विधाओं का विकास भारतीय समाज के बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिदृश्य से गहराई से जुड़ा हुआ है। गद्य, अपने स्वभाव से, जीवन की जटिलताओं और यथार्थ की बहुस्तरीय संरचनाओं को अभिव्यक्त करने का सर्वाधिक सक्षम माध्यम रहा है। जहाँ कविता भावनात्मक सघनता का सौंदर्य रचती है, वहीं गद्य सामाजिक विवेक, अनुभवजन्य सत्य और नैतिक प्रश्नों को विस्तार और तर्क के साथ प्रस्तुत करता है। समकालीन हिन्दी गद्य में यह अपेक्षा और भी प्रबल हो गई है कि वह केवल वर्णनात्मक न होकर सामाजिक हस्तक्षेप की भूमिका निभाए।

इसी संदर्भ में डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य-साहित्य विशेष महत्व रखता है। उनका लेखन कविता और लघुकथा तक सीमित न रहकर निबंध, संस्मरण, आलोचना, यात्रा वृत्तांत और साक्षात्कार जैसी विविध विधाओं में फैलता है। यह बहुविधता केवल साहित्यिक कौशल का प्रमाण नहीं, बल्कि उनके व्यापक सामाजिक सरोकारों और मानवीय दृष्टि का योतक है। डॉ. शर्मा का गद्य जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों से लेकर व्यापक सामाजिक संरचनाओं तक एक सतत संवाद स्थापित करता है, जहाँ संवेदना के साथ तर्क और अनुभूति के साथ विवेक का संतुलन दिखाई देता है।

विशेष रूप से उनके गद्य में'संवेदना' का स्वर भावुकता से ऊपर उठकर नैतिक चेतना का रूप ग्रहण करता है। यह संवेदना स्त्री-जीवन की पीड़ा, सामाजिक असमानताओं, सांस्कृतिक विडंबनाओं और प्रकृति के क्षरण जैसे विषयों को केवल रेखांकित नहीं करती, बल्कि पाठक को सोचने और प्रश्न करने के लिए प्रेरित करती है। यही कारण है कि डॉ. पदमजा शर्मा का गद्य समकालीन हिन्दी साहित्य में एक जिम्मेदार और प्रतिबद्ध साहित्यिक उपस्थिति के रूप में स्थापित होता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र इसी दृष्टि से डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करता है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि उनका लेखन किस प्रकार हिन्दी गद्य को वैचारिक गहराई, सामाजिक प्रासंगिकता और मानवीय संवेदना की नई दिशा प्रदान करता है।

2. शोध परिप्रेक्ष्य एवं उद्देश्य:

हिन्दी गद्य-साहित्य के समकालीन परिदृश्य में एक प्रमुख समस्या यह देखी जाती है कि अनेक रचनाकारों के बहुआयामी गद्य-अवदान को या तो आंशिक रूप से पढ़ा गया है या केवल विधागत वर्गीकरण तक सीमित कर दिया गया है। विशेषतः स्त्री-रचनाकारों के संदर्भ में यह प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट हो जाती है, जहाँ उनके लेखन को 'संवेदनशील' या 'भावनात्मक' कहकर उसके वैचारिक, नैतिक और सामाजिक हस्तक्षेप को गौण मान लिया जाता है। इस प्रकार का पाठ व्यवहार न केवल रचनाकार के साथ अन्याय करता है, बल्कि हिन्दी गद्य की समृद्ध परंपरा को भी संकुचित करता है।

डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य-साहित्य इसी उपेक्षा का शिकार रहा है। यद्यपि उनकी कविता और लघुकथा पर अपेक्षाकृत चर्चा हुई है, परंतु उनके निबंध, संस्मरण, आलोचना, यात्रा वृत्तांत, साक्षात्कार और सामाजिक-सांस्कृतिक लेखन को एक समग्र दृष्टि से देखने का प्रयास कम हुआ है। प्रस्तुत शोध का परिप्रेक्ष्य इसी रिक्तता से उत्पन्न होता है। यह अध्ययन डॉ. शर्मा के गद्य को एक पृथक विधागत इकाई न मानकर, उसे सामाजिक चेतना, स्त्री-दृष्टि और नैतिक विवेक के संयुक्त रूप में देखने का प्रयास करता है।

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य केवल अनुभव वर्णन या भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समकालीन समाज के जटिल प्रश्नों-जैसे स्त्री-अस्मिता, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक क्षरण, नैतिक संकट और मानवीय संबंधों के विघटन-पर एक सुस्पष्ट वैचारिक हस्तक्षेप प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध यह भी रेखांकित करना चाहता है कि उनके गद्य में संवेदना किस प्रकार एक सक्रिय शक्ति के रूप में कार्य करती है,जो पाठक को सहानुभूति से आगे बढ़ाकर आत्ममंथन और प्रतिरोध की चेतना तक ले जाती है। अतः यह शोध केवल साहित्यिक मूल्यांकन का उपक्रम नहीं है, बल्कि हिन्दी गद्य में स्त्री लेखन की उस परंपरा को पुनस्र्थापित करने का प्रयास है, जहाँ लेखन सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक प्रतिबद्धता से जुड़ा हुआ है।

3. गद्य-साहित्य में बहुविधता, संवेदना और सामाजिक चेतनाः एक वैचारिक परिप्रेक्ष्य:

प्रस्तुत अध्ययन का आधार डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य साहित्य का वह समग्र वैचारिक परिदृश्य है, जिसमें उनकी रचनात्मकता किसी एक साहित्यिक विधा तक सीमित न रहकर गद्य की अनेक विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। उनका गद्य-लेखन निबंध, संस्मरण, आलोचना, यात्रा वृत्तांत, साक्षात्कार तथा सामाजिक-सांस्कृतिक लेखन जैसी विविध विधाओं में विस्तृत होकर एक ऐसे साहित्यिक व्यक्तित्व को रेखांकित करता है, जो समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के प्रति गहन प्रतिबद्धता से जुड़ा हुआ है। यह बहुविधता मात्र विधागत विस्तार नहीं, बल्कि जीवनानुभवों और सामाजिक यथार्थ की बहुस्तरीय अभिव्यक्ति का सृजनात्मक माध्यम है।

डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य का वैचारिक ढाँचा मुख्यतः तीन स्तरों पर विकसित होता हुआ दिखाई देता है। प्रथम स्तर साहित्यिक बहुविधता का है, जहाँ गद्य को केवल अभिव्यक्ति का उपकरण न मानकर जीवन के विविध अनुभवों का सर्जनात्मक विस्तार बनाया गया है। इस स्तर पर उनका गद्य शिल्पगत प्रयोग से आगे बढ़कर अनुभूति और विचार के समन्वय का रूप लेता है। द्वितीय स्तर सामाजिक चेतना का है, जिसमें उनका लेखन समाज की जटिलताओं, विसंगतियों, संघर्षों और संरचनात्मक असमानताओं से गहराई से जुड़ता है। यहाँ गद्य सामाजिक यथार्थ की पहचान और उसकी आलोचनात्मक पड़ताल का माध्यम बनता है। तृतीय और सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्तर संवेदना का है, जो उनके समस्त गद्य-साहित्य को एक सूत्र में बाँधता है। यह संवेदना व्यक्तिगत करुणा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक अन्याय की पहचान, स्त्री-जीवन के संघर्षों की अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण पर गहरी चिंता के रूप में सामने आती है। निबंधों में यह संवेदना विवेकपूर्ण तर्क और वैचारिक स्पष्टता के साथ प्रकट होती

© 2026 ललिता डाबी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

है, संस्मरणों में आत्मीय अनुभव का रूप ग्रहण करती है, तथा आलोचनात्मक लेखन में वस्तुनिष्ठ दृष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व के संतुलन के रूप में दिखाई देती है।

इस समग्र वैचारिक परिपेक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य-साहित्य हिन्दी गय की परंपरा में एक ऐसे सेतु का निर्माण करता है, जो साहित्यिक सौंदर्य, सामाजिक यथार्थ और नैतिक चेतना को एक साथ जोड़ता है। यही वैचारिक ढाँचा प्रस्तुत शोध-पत्र की आगे की आलोचनात्मक विवेचना का आधार बनता है और डॉ.शर्मा के गद्य अवदान को समकालीन हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट और प्रासंगिक स्थान प्रदान करता है।

4. संवेदना बनाम भावुकता मूल वैचारिक भेदः

डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य-साहित्य को समझने के लिए 'संवेदना' और 'भावुकता' के बीच के मूलभूत अंतर को स्पष्ट करना अनिवार्य है। प्रायः हिन्दी साहित्य में स्त्री-लेखन को भावुकता से जोड़ दिया जाता है, जिससे उसकी वैचारिक गंभीरता और सामाजिक भूमिका को कम करके आँका जाता है।

परंतु डॉ.शर्मा की रचनाओं में संवेदना का स्वर इस पारंपरिक धारणा को तोड़ता है। भावुकता जहाँ क्षणिक भावावेग और आत्मकेन्द्रित अनुभूति तक सीमित रहती है,वहीं संवेदना सामाजिक यथार्थ की समझ और मानवीय पीड़ा के प्रति उत्तरदायी दृष्टि से उत्पन्न होती है। डॉ. पद्मजा शर्मा की संवेदना रोने या करुणा उत्पन्न करने का साधन नहीं है, बल्कि वह पाठक को प्रश्न करने, सोचने और सामाजिक संरचनाओं पर पुनर्विचार करने के लिए विवश करती है। उनके गद्य में संवेदना एक सक्रिय शक्ति के रूप में उपस्थित होती है,जो अन्याय को पहचानती है और चुप रहकर भी प्रतिरोध दर्ज कराती है।

उनकी रचनाओं में स्त्री जीवन की पीड़ा को केवल दयनीय अवस्था के रूप में नहीं प्रस्तुत किया गया है। इसके स्थान पर स्त्री की संघर्षशीलता, आत्मसम्मान और नैतिक दृढ़ता को केंद्र में रखा गया है। यही संवेदना भावुकता से आगे बढ़कर नैतिक चेतना का रूप ले लेती है। यह चेतना पाठक को सहानुभूति से आगे ले जाकर आत्मालोचन और सामाजिक जिम्मेदारी के बोध तक पहुँचाती है। इस प्रकार, डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य में संवेदना और भावुकता का यह स्पष्ट भेद उनके साहित्यिक अवदानको विशिष्ट बनाता है और हिन्दी गद्य को एक गंभीर वैचारिक दिशा प्रदान करता है।

5. मुख्य पीड़ा-बिन्दुः समकालीन हिन्दी गद्य का संकट और डॉ. पद्मजा शर्मा का हस्तक्षेपः

समकालीन हिन्दी गद्य के परिदृश्य में अनेक अंतर्निहित संकट उभरकर सामने आते हैं, जिनमें संवेदना का क्षरण, नैतिक विवेक की उपेक्षा और स्त्री-अनुभव का सतही पाठ प्रमुख हैं। इन संकटों का परिणाम यह हुआ है कि गद्य प्रायः या तो वैचारिक कठोरता में सिमट जाता है या फिर भावुकता की अतिशयता में अपनी सामाजिक प्रासंगिकता खो बैठता है। प्रस्तुत अध्ययन में इन संकटों को 'पीड़ा-बिन्दु' के रूप में चिन्हित किया गया है, ताकि डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य-साहित्य द्वारा प्रस्तुत समाधानात्मक दृष्टि को स्पष्ट किया जा सके।

पहला प्रमुख पीड़ा-बिन्दु संवेदना का अवमूल्यन है। आधुनिक गद्य में संवेदना को अकसर 'भावनात्मकता' के पर्याय के रूप में देखा गया, जिससे उसकी बौद्धिक और नैतिक शक्ति को कमतर आँका गया। इसके विपरीत, डॉ.पद्मजा शर्मा की रचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि संवेदना सामाजिक यथार्थ की पहचान और मानवीय पीड़ा की जिम्मेदार समझ से उत्पन्न होती है। उनके गद्य में संवेदना सजावटी तत्व नहीं, बल्कि विचार और कर्म के बीच सेतु का कार्य करती है।

दूसरा पीड़ा-बिन्दु स्त्री-अनुभव का सीमित पाठ है। स्त्री-लेखन को प्रायः निजी दुखों की अभिव्यक्ति तक सीमित कर दिया गया है, जिससे उसके सामाजिक और संरचनात्मक प्रश्न ओझल हो जाते हैं। डॉ. शर्मा का गय इस प्रवृत्ति का प्रतिरोध करता है। वे स्त्री जीवन को केवल पीड़ा के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं से जूझती हुई चेतन इकाई के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

तीसरा पीड़ा-बिन्दु नैतिक चेतना का क्षरण है। साहित्य जब केवल सौंदर्य बोध तक सीमित हो जाता है, तब वह सामाजिक उत्तरदायित्व से कट जाता है। डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य इस संकट का उत्तर है, क्योंकि उसमें नैतिक प्रश्न निरंतर उपस्थित रहते हैं-चाहे वे सामाजिक अन्याय के हों, सांस्कृतिक विसंगतियों के हों या मानवीय संबंधों के विघटन के।

6. गद्य में सामाजिक सरोकार और वैचारिक स्पष्टता:

डॉ. पद्मजा शर्मा का साहित्य हिन्दी गद्य की उस परंपरा से जुड़ते हैं, जहाँ साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि विवेक का मार्गदर्शक भी होता है। उनके निबंधों में विषय-वस्तु की विविधता-स्त्री-जीवन, शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक असमानता और मानवीय मूल्य-एक व्यापक सामाजिक दृष्टि को उद्घाटित करती है। यह निबंधात्मक लेखन केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करता, बल्कि उनके पीछे निहित सामाजिक संरचनाओं और मानसिकताओं की पड़ताल करता है।

उनकी लेखन शैली की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें तर्क और संवेदना का संतुलन बना रहता है। वे किसी भी सामाजिक समस्या को भावनात्मक आवेग में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि विवेकपूर्ण विश्लेषण के माध्यम से पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। स्त्री जीवन पर लिखे उनके लेखन में करुणा के साथ-साथ आत्मसम्मान और संघर्ष की चेतना स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ स्त्री न तो दया की पात्र है और न ही आदर्शीकृत छवि, बल्कि सामाजिक यथार्थ से जूझती हुई जीवंत इकाई है।

इन लेखन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे पाठक को निष्क्रिय सहानुभूति में नहीं छोड़ते, बल्कि आत्ममंथन की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार डॉ. पद्मजा शर्मा के लेखन सामाजिक सरोकारों को केवल रेखांकित नहीं करते, बल्कि उन्हें नैतिक विमर्श का रूप प्रदान करते हैं।

© 2026 ललिता डाबी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

7. संस्मरणात्मक गद्यः व्यक्तिगत अनुभव से सामाजिक यथार्थ तक:

डॉ. पद्मजा शर्मा के संस्मरणात्मक गद्य में आत्मीयता और अनुभवजन्य सत्य का ऐसा समन्वय दिखाई देता है, जो हिन्दी गद्य में दुर्लभ है। उनके संस्मरण व्यक्तिगत स्मृतियों तक सीमित न रहकर सामाजिक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बचपन, पारिवारिक परिवेश, ग्रामीण जीवन और सांस्कृतिक स्मृतियाँ उनके संस्मरणों में इस प्रकार उभरती हैं कि पाठक उन्हें अपने जीवन से जोड़ पाता है।

इन संस्मरणों की विशेषता यह है कि व्यक्तिगत अनुभव सामाजिक यथार्थ में रूपांतरित हो जाते हैं। डॉ. शर्मा निजी स्मृतियों के माध्यम से समाज की व्यापक संरचनाओं जैसे परंपरा, संस्कृति, स्त्री भूमिका और सामाजिक अपेक्षाओं पर प्रकाश डालती हैं। यहाँ संवेदना आत्म केंद्रित नहीं, बल्कि सामाजिक साझेदारी का रूप ग्रहण करती है।

संस्मरणात्मक गद्य में उनकी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और आत्मीय है, किंतु उसमें भावुकता का अतिरेक नहीं है। यह संतुलन संस्मरणों को साहित्यिक गरिमा प्रदान करता है और उन्हें सामाजिक दस्तावेज के रूप में स्थापित करता है।

8. आलोचनात्मक लेखनः निष्पक्ष दृष्टि और नैतिक प्रतिबद्धता:

डॉ. पद्मजा शर्मा की समीक्षाएँ और आलोचनात्मक लेखन हिन्दी आलोचना की परंपरा में एक संवेदनशील और विवेकशील हस्तक्षेप प्रस्तुत करते हैं। उनकी आलोचना औपचारिक मूल्यांकन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि रचना की संवेदना, शिल्प और सामाजिक प्रासंगिकता को एकसाथ देखने का प्रयास करती है।

उनकी आलोचनात्मक दृष्टि का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह स्त्री-दृष्टि से संचालित होते हुए भी पक्षपातपूर्ण नहीं है। वे रचना की सीमाओं और संभावनाओं को समान गंभीरता से प्रस्तुत करती हैं। इस प्रक्रिया में उनका आलोचनात्मक लेखन साहित्यिक मूल्यांकन को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ देता है।

इस प्रकार डॉ. पद्मजा शर्मा की आलोचना केवल साहित्यिक विमर्श नहीं, बल्कि नैतिक चेतना का विस्तार बन जाती है, जो पाठक और समाज-दोनों को सजग करती है।

9. यात्रा वृत्तांत: भौगोलिक भ्रमण से सांस्कृतिक आत्मबोध तक:

डॉ. पद्मजा शर्मा के यात्रा वृत्तांत पारंपरिक यात्रा-वर्णन की सीमाओं को लाँघते हुए एक गहरे सांस्कृतिक और मानवीय विमर्श का रूप ग्रहण करते हैं।सामान्यतः यात्रा वृत्तांतों में स्थान-विशेष के प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक महत्व यादृश्यात्मक आकर्षण पर बल दिया जाता है, किंतु डॉ. शर्मा का यात्रा लेखन इन सतही स्तरों से आगे बढ़कर उस स्थान की सामाजिक संरचना, लोक संस्कृति और मानवीय संबंधों की गहन पड़ताल करता है।

उनके यात्रा वृत्तांतों में यात्रा केवल बाह्य गमन नहीं, बल्कि आंतरिक बोध की प्रक्रिया बन जाती है। वे जिस स्थान का वर्णन करती हैं,वहाँ के जनजीवन, लोकाचार, सांस्कृतिक परंपराएँ और स्त्री की स्थिति उनके लेखन का अभिन्न अंग बन जाती हैं। इस प्रकार यात्रा वृत्तांत सामाजिक अध्ययन का रूप ले लेता है, जहाँ पाठक न केवल स्थान को देखता है, बल्कि उसे समझता भी है।

इन रचनाओं में संवेदना का स्वर विशेष रूप से स्पष्ट है। यह संवेदना पर्यटनजन्य उत्साह से नहीं, बल्कि मानवीय जुड़ाव और सांस्कृतिक सम्मान से उत्पन्न होती है। डॉ.शर्मा का यात्रा वृत्तांत यह सिद्ध करता है कि गद्य की यह विधा केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मबोध और सामाजिक चेतना का सशक्त माध्यम हो सकती है।

10. साक्षात्कारः संवाद के माध्यम से सामाजिक और साहित्यिक चेतना:

डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य-साहित्य में साक्षात्कार एक स्वतंत्र और महत्वपूर्ण विधा के रूप में उभरता है। साक्षात्कार को प्रायः पत्रकारिता की विधा मानकर साहित्यिकविमर्श से अलग कर दिया जाता है,किंतु डॉ. शर्मा के लेखन में साक्षात्कार गहन साहित्यिक और वैचारिक संवाद का माध्यम बन जाता है। उनके साक्षात्कारों में प्रश्न केवल सूचना प्राप्त करने का साधन नहीं होते, बल्कि विचारोत्तेजक विमर्श की भूमिका निभाते हैं।

इन साक्षात्कारों में रचनाकार, विचारक या सामाजिक व्यक्तित्व के अनुभव, जीवन दृष्टि और रचनात्मक संघर्ष सामने आते हैं। डॉ. शर्मा प्रश्नकर्ता के रूप में न तो तटस्थ दर्शक बनती हैं और न ही आत्मप्रदर्शन करती हैं, बल्कि संवाद को इस प्रकार संचालित करती हैं कि साक्षात्कारदेने वाला व्यक्ति अपने विचारोंकी गहराई तक पहुँच सके। इस प्रक्रिया में संवेदना और विवेक का संतुलन बना रहता है।

साहित्यिक दृष्टि से उनके साक्षात्कार गद्य की उस परंपरा को समृद्ध करते हैं, जहाँ संवाद के माध्यम से समाज और साहित्य के अंतर्संबंधों को समझा जाताहै। यहाँ साक्षात्कार केवल व्यक्ति विशेषका परिचय नहीं देता, बल्कि उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का भी दस्तावेज बन जाता है।

11. सामाजिक-सांस्कृतिक लेखनः परंपरा, परिवर्तन और स्त्री-दृष्टि:

डॉ. पद्मजा शर्मा के सामाजिक-सांस्कृतिक लेखन में भारतीय परंपरा और समकालीन परिवर्तन के बीच का द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे न तो परंपरा का अंधसमर्थन करती हैं और न ही आधुनिकता के नाम पर उसे नकारती हैं। उनका लेखन संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जहाँ परंपरा की सार्थकता और आधुनिकता की आवश्यकता - दोनों को समझने का प्रयास किया गया है।

विशेष रूप से लोक-संस्कृति, ग्रामीण जीवन और क्षेत्रीय परंपराओं पर उनके लेखन में गहरी संवेदना दिखाई देती है। वे लोकगीतों, लोककथाओं और सांस्कृतिक अनुष्ठानों को केवल सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नहीं,बल्कि सामाजिक चेतना के वाहक के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इस प्रक्रिया में स्त्री की भूमिका और उसकी सांस्कृतिकउपस्थिति विशेषरूप से उभरकर सामने आती है।

© 2026 ललिता डाबी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

डॉ. शर्मा का सामाजिक-सांस्कृतिक लेखन यह स्पष्ट करता है कि संस्कृति स्थिर नहीं होती, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील होती है। वे बदलते सामाजिक मूल्यों, पारिवारिक संरचनाओं और स्त्री-पुरुष संबंधों पर गहन दृष्टि डालती हैं। यह लेखन पाठक को अतीत और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करने के लिए प्रेरित करताहै।

12. स्त्री-दृष्टि का विस्तारः करुणा से प्रतिरोध तक:

डॉ. पद्मजा शर्मा के गद्य साहित्य में स्त्री-दृष्टि एक केंद्रीय वैचारिक तत्व के रूप में उभरती है। यह दृष्टि करुणा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि प्रतिरोध और आत्मसम्मान की चेतना को भी समाहित करती है। उनके लेखन में स्त्री केवल सामाजिक पीड़ाकी प्रतीक नहीं है, बल्कि परिवर्तन की सक्रिय शक्ति के रूप में सामनेआती है।

निबंधों, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों और साक्षात्कारों सभी विधाओं में स्त्री का अनुभव सामाजिक संरचनाओं से जुड़ता है। डॉ. शर्मा स्त्री की निजी पीड़ा को सामाजिक प्रश्न में रूपांतरित करती हैं। यही प्रक्रिया उनके गद्य को निजी संवेदना से ऊपर उठाकर सामूहिक चेतना का स्वर प्रदान करती है।

यह स्त्री-दृष्टि भावुकता से मुक्त और नैतिक विवेक से संपन्न है। इसमें अन्याय के विरुद्ध मौन प्रतिरोध भी है और परिवर्तन की आकांक्षा भी। इस प्रकार डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य स्त्री-लेखन की उस परंपरा को सुदृढ़ करता है, जो साहित्य को सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा से जोड़ती है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य-साहित्य समकालीन हिन्दी गद्य में केवल विधागत विस्तार नहीं, बल्कि वैचारिक और नैतिक पुनर्सरचना का सशक्त उदाहरण है। उनके लेखन की केन्द्रीय विशेषता 'संवेदना' है, जो भावुकता के दायरे से बाहर निकलकर सामाजिक यथार्थ की पहचान, नैतिक विवेक की जागृति और मानवीय गरिमा की रक्षा का माध्यम बनती है। यह संवेदना निबंधों में तर्क और विवेक के साथ, संस्मरणों में अनुभवजन्य सत्य के रूप में, आलोचना में वस्तुनिष्ठता के साथ और यात्रा वृत्तांत व साक्षात्कार में संवादात्मक चेतना के रूप में अभिव्यक्त होती है।

अध्ययन से यह भी स्थापित होता है कि डॉ. शर्मा की स्त्री-दृष्टि निजी पीड़ा तक सीमित नहीं है। वे स्त्री-अनुभव को सामाजिक संरचनाओं से जोड़कर प्रस्तुत करती हैं, जिससे स्त्री जीवन की जटिलताएँ केवल सहानुभूति का विषय न रहकर वैचारिक विमर्श का आधार बनती हैं। इस दृष्टि से उनका गद्य स्त्री-लेखन के उस चरण का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ करुणा के साथ प्रतिरोध और आत्मसम्मान की चेतना सह अस्तित्व में दिखाई देती है।

एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य सामाजिक-सांस्कृतिक लेखन के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलित संवाद स्थापित करता है। वे न तो परंपरा का अंधसमर्थन करती हैं और न ही आधुनिकता के नाम पर सांस्कृतिक मूल्यों का निषेध। यह संतुलन उनके गद्य को वैचारिक परिपक्वता और सामाजिक प्रासंगिकता प्रदान करता है।

13. हिन्दी गद्य पर डॉ. पद्मजा शर्मा का अवदान-एक समग्र मूल्यांकन:

डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य-साहित्य हिन्दी गद्य की उस परंपरा को आगे बढ़ाता है, जिसमें साहित्य को सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना से जोड़ा जाता है। उनके निबंधों में जहाँ सामाजिक समस्याओं का विवेकपूर्ण विश्लेषण मिलता है, वहीं संस्मरणात्मक गद्य में आत्मीय अनुभव सामाजिक दस्तावेज का रूप ग्रहण करते हैं। उनकी आलोचना साहित्यिक मूल्यांकन को संवेदनशीलता और निष्पक्षता के साथ प्रस्तुत करती है, जिससे आलोचना मात्र निर्णयात्मक प्रक्रिया न रहकर संवादात्मक विमर्श बन जाती है।

यात्रा वृत्तांत और साक्षात्कार जैसी विधाओं में उनका लेखन हिन्दी गद्य के विस्तार का प्रमाण है। ये विधाएँ उनके यहाँ गौण न रहकर सामाजिक चेतना के सक्रिय माध्यम बनती हैं। विशेष रूप से साक्षात्कारों में संवाद की शैली साहित्यिक गद्य को नई ऊर्जा प्रदान करती है और पाठक को समकालीन वैचारिक प्रवाह से जोड़ती है।

इस समग्र मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य हिन्दी साहित्य में एक ऐसी वैचारिक धारा का निर्माण करता है,जो संवेदना, विवेक और नैतिकता के संतुलन पर आधारित है। उनका लेखन पाठक को निष्क्रिय उपभोक्ता नहीं रहने देता, बल्कि उसे विचार शील सहभागी बनने के लिए प्रेरित करता है।

14. निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य साहित्य हिन्दी गद्य की समकालीन परंपरा में एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य हस्तक्षेप है। उनकी रचनाओं में संवेदना भावुकता का पर्याय नहीं, बल्कि नैतिक चेतना की सक्रिय शक्ति है, जो सामाजिक अन्याय, स्त्री-अस्मिता और सांस्कृतिक संकटों को पहचानने और उन पर विचार करने के लिए पाठक को प्रेरित करती है। उनका गय साहित्य को सौंदर्यात्मक अनुभव से आगे बढ़ाकर सामाजिक संवाद और परिवर्तन की चेतना से जोड़ता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि डॉ. पद्मजा शर्मा का गद्य हिन्दी साहित्य को केवल विधागत विस्तार नहीं देता, बल्कि उसे वैचारिक गहराई और सामाजिक प्रासंगिकता की नई दिशा प्रदान करता है। इस दृष्टि से उनका साहित्य न केवल अध्ययन की वस्तु है, बल्कि समकालीन समाज के लिए एक नैतिक संदर्भ भी है। भविष्य में उनके गद्य-साहित्य पर होने वाले अध्ययन हिन्दी गद्य की समझ को और समृद्ध करेंगे ऐसी आशा के साथ यह शोध-पत्र संपन्न किया जाता है।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. नवीनतम पुनर्मुद्रण, वाराणसीः नागरी प्रचारिणी सभा, 2002, पृ. 15-42, 278-295.
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, साहित्य की भूमिका, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2006, पृ. 21-39, 112-128.

© 2026 ललिता डाबी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. सिंह, नामवर, आलोचना के नए प्रतिमान, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 9-27, 87- 103.
4. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, हिन्दी आलोचना की परंपरा, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2008, पृ. 55- 72, 210-225.
5. नवल, नंदकिशोर, समकालीन हिन्दी साहित्य, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ.101- 118.
6. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ, प्रयागराजः लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. 63-79.
7. वर्मा, महादेवी, स्त्री के अर्थ, प्रयागराजः साहित्य भवन, 2005, पृ. 11-29.
8. पुष्पा, मैत्रेयी, स्त्रीलेखन: स्वप्नऔर यथार्थ, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2014, पृ. 41-58.
9. तिवारी, भोलानाथ, हिन्दी गद्यः स्वरूप और विकास, वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2001, पृ. 133-160.
10. मिश्र, विद्यानिवास, भारतीयसाहित्य की भूमिका, नई दिल्लीः साहित्य अकादेमी, 1998, पृ. 10-104.
11. त्रिपाठी, विश्वनाथ, आलोचनाका विवेक, इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन, 2010, पृ. 17-33.
12. परसाई, हरिशंकर, सदाचार का ताबीज, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2004, पृ. 5-18.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.

© 2026 ललिता डाबी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/